

यवतमाल जिला विकास समिति यवतमाल द्वारा संचालित

श्रीमती नानकीबाई वाधवानी कला महाविद्यालय,यवतमाल

प्रेमचंद जी जयंती

कार्यक्रम का अहवाल

३१ जुलाई, २०२६

आयोजक

प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री

हिंदी–विभाग

श्रीमती नानकीबाई वाधवानी कला महाविद्यालय, यवतमाल

मार्गदर्शक

डॉ. जयंतजी म. चतुर

श्रीमती नानकीबाई वाधवानी कला महाविद्यालय, यवतमाल

वाधवानी कॉलेज में प्रेमचंदजी जयंती मनाई...

यवतमाल जिला विकास समिति यवतमाल द्वारा संचालित श्रीमती नानकीबाई वाधवानी कला महाविद्यालय, यवतमाल स्थित दिनांक १ अगस्त, २०२६ शनिवार को महाविद्याालय में ''प्रेमचंद जयंती'' कार्यक्रम का आयोजन प्रा. डॉ. सुरेखा मंत्री ने किया था। आज का दिन भारतीय संसार में प्रेमचंद जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। हिंदी साहित्य के युगांतकारी साहित्यकार के रूप में ग्राम्य जीवन के साथ भारतीय संस्कारों, सभ्यता तथा संस्कृति को आपने अमर और सार्थक साहित्य में उजागर किया है। आपके योगदान को हमारा देश कभी विस्मृत नही करेगा। आपके चरणों में श्रध्दा वंदन।

मुंशी प्रेमचंद हिंदी और उर्दू साहित्य के महान लेखक थे, जिन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहकर सम्मानित किया जाता है। प्रेमचंदजी का साहित्य पर बहुत गहरा प्रभाव पडा है। बल्कि किसान जीवन की उनकी समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता ओर अधिक बढ जाती है। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचंद हिंदी साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे है।

प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई सन्१८८० को बनारस शहर से चार मील दूर लमही गॉव में हुआ था पिता का नाम अजायब राय और माता का नाम आनंदी देवी। पिता डाकखाने में मामूली नौकर के तौर पर काम करते थे। प्रेमचंद जी का पहला नाम धनपतराय की उम्र जब केवल आठ साल की थी तो माता के स्वर्गवास हो जाने के बाद से अपने जीवन के अंत तक लगातार पिषम परिस्थितियों का सामना धनपतराय को करना पडा। पिताजी ने दूसरी शादी कर ली जिसके कारण बालक प्रेम व स्नेह को चाहते हुए भीन ा पा सका उनका जीवन गरीबी में ही पला। पहनने के लिए कपडें न ीिते थे और न खाने के लिए प्र्याप्त भोजन मिलता था। इन सब के अलावा घर में सौतेली मॉ का व्यवहार भी हालात को खस्ता करने वाला था।

धनपतराय अर्थात मुंशी प्रेमचंद जी की जंयती के अवसर पर उन्हें अनंत नमन। यही सही है कि हम आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष मना रहे है। देश को स्वतंत्रता दिलाने में विभिन्न साहित्यकारों का बेजोड योगदान रहा है। इन में मुंशी प्रेमचंद एक है। ''सोजे वतन'' शीर्षक कहानी संग्रह में भारतीय जनता में चेतना निर्माण करने वाले, अपने कथा साहित्य द्वारा भारतीय जनमानस में अहिंसा आंदोलन, स्वदेशी वस्तूओं के प्रति प्रेम निर्माण करने वाले प्रेमचंद, जेल की सजा भुगतने पर भी भारत माता के पैरों में पडी दासता की बेडियॉ तोडने के लिए अनवरत प्रयास करनेवाले मुंशी प्रेमचंद को हम कैसे भूल सकते है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद जी का साहित्य प्रासंगिक है। ऐसे महान व्यक्तित्व को जयंती के अवसर पर पुनश्च नमन। कॉलेज में बहुत अच्छी तरह से जयंती मनाई। सभी ने सहभाग लिया। कॉलेज के सभी प्राध्यापक वृद शामील थे।



प्रेमचंद जी के प्रतिमा को माल्य अर्पण



विद्यार्थियों के साथ



प्रेमचंद जी के जीवन पर प्रकाश

पुण्य नगरी

City Pulse

हिंदी साहित्य सम्राट प्रेमचंद यांची जयंती



यवतमाळ : जिल्हा विकास समिती यवतमाळद्वारा संचालित श्रीमती नानकीबाई वाधवानी कला महाविद्यालयात १ ऑगस्ट रोजी हिंदी साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद यांच्या जयंतीचा कार्यक्रम प्राचार्या डॉ. सुरेखा मंत्री यांच्या मार्गदर्शनात पार पडला. यावेळी डॉ. सुरेखा मंत्री यांनी सांगितले की, मुंशी प्रेमचंद हे हिंदी व उर्दू साहित्यातील नावाजलेले नाव आहे. त्यांचे सर्वोत्कृष्ट कार्य कथा, कांदबरीमध्ये आढळते. मानसरोवर शैलीमधे संक्षिप्त कादंबऱ्या प्रमाणेच त्यांच्या विषयासाठी उत्तर भारतीय जीवनाच्या विस्तृत श्रेणीवर रेखाटतात. त्यांचे जीवनमूल्य मानवतावाद, सामाजिक समता आणि कष्टकऱ्यां विषयीची सहानुभूती यावर आधारलेले असल्याची माहिती दिली. जात, धर्म किंवा वर्णभेद न मानता समाजात समानता असावी, यासाठी ते आग्रही होते. शेतकरी मजूर आणि गरीब वर्गांवरील अन्यायाविरोधात त्यांनी नेहमी आवाज उठविला. समाजात प्रचलित असलेल्या जातीय पदानुक्रमानुसार स्त्रिया आणि मजुरांच्या दुर्देशेबद्दल लिहणारे ते पहिले लेखक असल्याची माहिती त्यांनी दिली. याप्रसंगी अन्य मान्यवरांनीही त्यांचे मत व्यक्त केले. या कार्यक्रमाला प्राध्यापकवृंद आणि विद्यार्थी उपस्थित होते.

'सीएमसीएस'च्या विद्यार्थ्यांची क्षेत्रभेट



Yavatmal Edition
Aug 02, 2026 Page No. 04
Powered by: erelego.com